(ग) → कर्मनाशा की हार

कर्मनाशा की हार कहानी कवि 'शिवप्रसाद सिंह' द्वारा रचित कहानी है जिसके नायक गौरव पाण्डे के प्रगतिशील और मानवतावादी सोच के चरित्र आज के समाज में व्याप्त रूढ़िवादियों को फटकारते हुए सच को स्वीकार कर लेने का बल प्रदान किया है। इस कहानी से निम्नलिखित समस्याओं का उल्लेख किया गया है -

⊙ अंधविश्वास : आज भी हमारे समाज मे अंधविश्वास व्यक्तियों मे कूट-कूट कर भरी है। जिसका मूलकारण है शिक्षा की कमी। और इसके

कारण ही आज भी हमारा देश अन्य देशों से पीछे पड़ा है। और इसे खत्म करने का सबको मिलकर प्रयास करना पड़ेगा।

⊙ छुआ-छूत की भावना : आज के युग में समाज में हो रहे छुआ-छूत के नाम पर व्यंग का बड़े ही सहज भाव से कवि ने इसे प्रकाश में लाया है और समाज को भलिभाति परिचित करवाया है।

⊙ नाड़ी शोषण : इस कहानी के माध्यम से कवि शिवप्रसाद सिंह ने नाड़ी के चरित्र को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है कि आज भी नाड़ी को निम्न नजर से देखा जाता है। जिसके कारण आज हमारे समाज में औरत की कोई ईज्जत नही है।

⊙ प्रगतिशील सोच की कमी : आज देश के भिन्न-भिन्न कोनों में व्यक्ति तो उपस्थित है किन्तु उनके अंदर शिक्षा की कमी है। जब तक उनके अंदर शिक्षा नही आएगी तब तक वह कभी आगे नही बढ़ पाएंगे। और ऐसे ही अंधविश्वास के जाल में जकड़े चले जाएंगे।

⊙ मानवतावादी सोच की कमी : कवि बताना चाहते है कि आज समाज में मानवतावादी सोच वाले व्यक्तियों की संख्या गिनी-चुनी है और इसके कारण स्वरूप ही आज हमारा देश किसी भी गलत काम का विरोध

खुलकर नही कर पा रहे हो और दिन पर दिन हमलो पीछे चले जा रहे हो।

अतः हम कह सकते है कि शिवप्रसाद की कहानी आज के रूढ़िवादि समाज को फटकारने का काम किया है और साथ ही साथ समाज को नया पाठ पढ़ाया है।